01|12|2021

Q. दृष्टिबाधिता क्या है? इसकी समस्या क्या है?

Ans. ईश्वर ने मनुष्यों को ज्ञानेन्द्रिया एवं workorgans (कर्मेन्द्रियाँ) दिया है। यदि उसमें कोई चोट या कष्ट हो तो कई समस्याएं हो जाती है। यदि उसमें कोई दोष उत्पन्न हो जाता है तो मानव अपूर्ण समझा जाता है। किसी भी इन्द्रियों में कोई भी दोष हो तो उससे सामाजिक जीवन, व्यक्तिगत जीवन, व्यवसायिक जीवन, संवेगात्मक आदि संपूर्ण क्षेत्र पर प्रभाव पड़ता है।

Meaning of visual impairment

दृष्टिबाधित बच्चे ऐसे होते है जिनको देखने में समस्या होती है। वह भी दो प्रकार के होते है -

(i) आंशिक दृष्टिदोष

(ii) गंभीर दृष्टिदोष

1. आंशिक दृष्टिदोष :-

आंशिक दृष्टिकोण वाले बालको को देखने में थोड़ी समस्या होती है। ऐसे बालक मोटे और बड़े अक्षरों को पढ़ सकते है। इन बच्चों के नेत्रों में प्रतिबिंब की तीव्रता बहुत कम होती है। यह दोष निकट या दूर दोनो प्रकार का हो सकता है। इसका मुख्य कारण रेटिना की कमजोरी या दोष या नेत्रों से संबंधित व मांसपेशियों का ठीक से कार्य न करना हो सकता है। पूर्ण रूप से दृष्टि बाधित बालक वह है जिनकी किन्हीं कारणों से नेत्रों की रोशनी चली गई हो। वह देखने में बिल्कुल असमर्थ हो। ये विद्यालय में सामान्य बच्चों के साथ समायोजित नहीं हो पाते है। उन्हें शिक्षा देने के लिए विशेष प्रशिक्षित अध्यापकों की आवश्यकता होती है तथा इसके लिए ब्रेलिपि की सहायता ली जाती है। ब्रेल-लिपि लुईस ब्रेल

की देन है। यह आंखों के लिए एक वरदान की तरह साबित हुआ है। इसकी सहायता से वो आसानी से पढ़-लिख सकते हैं। दृष्टिबाधित बालकों को सामान्य कक्षा में पढ़ाने में परेशानी होती है। ये ब्रेललिपि के माध्यम से या श्रव्य माध्यम से सुनकर सीख सकते हैं।

06-12-21

Classification of Visual Impairment visual

- आंशिक रूप से दृष्टिबाधित बालक
- गंभीर रूप से या पूर्ण रूप से दृष्टिबाधित

1. आंशिक रूप से दृष्टिबाधित बालक :-

आंशिक रूप से दृष्टिबाधित उसे कहते हैं जो कुछ देख सकते हैं। यह 20 फीट की दूरी तक देख सकते हैं जबकि सामान्य बालक 70 फीट की दूरी तक देख सकता है।

आंशिक रूप से दृष्टिबाधित बालकों की सही समय पर जाँच की जानी आवश्यक है, विद्यालय के परिवेश के समय भी बच्चों का परीक्षण किया जा सकता है। माता-पिता को भी चाहिए कि अपने बच्चे के स्वास्थ्य का समय-समय पर परीक्षण कराना चाहिए।

2. गंभीर दृष्टिबाधित बालक :-

गंभीर रूप से दृष्टिबाधित बालक वे हैं, जिन्हें स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं देता है, वो चलने के लिए दूसरों की सहायता लेते हैं। ऐसे बच्चे सामान्य शिक्षण विधियों से पढ़ नहीं सकते हैं। इनके लिए ब्रेल लिपि का प्रयोग करते हैं।

3. Symptoms of Visual Impaired students
(दृष्टिबाधित बच्चों का लक्षण)

1. आँखे तिरछी होती है।
2. आँखों की पलकों में सूजन या खुजली होना
3. आँखो में पानी आना
4. प्रकाश के प्रति क्रियाशीलता
5. सिरदर्द करना या लगातार सरदर्द करना
6. समाचार पत्र में लिखे शब्दों को साफ रूप से न देख पाना।
7. आँखो के बहुत नजदीक रखकर पढ़ना
8. पढ़ते समय शब्दों का भ्रम होना।

4. Problems of adjustment (समायोजन की समस्या)

समाज में दृष्टिहीन या बाधित बच्चों को निम्न दृष्टि से देखा जाता है। उन्हें व्यक्तिगत या फिर सामाजिक समस्याएं होती है। इस कारण उनमें हीनता की भावना आ जाती है। समायोजन के संबंध में विद्वान सोच या फिर सभी विद्वान एकमत नही है।

5. Intelectual development (बौद्धिक विकास) :-

बुद्धि के विकास में गुणसूत्र के अतिरिक्त वातावरण, उनकी प्रकृति एवं अनुभव कार्य करते है। गंभीर एवं से बाधित बच्चों में उनका अभाव होना रहता है। उनके सीखने के अनुभव सीमित रहते है। बुद्धि लब्धि स्तर कम होने के कारण उनका बौद्धिक विकास सामान्य से कम होता है।

6. Slow speech development :-

दृष्टिहीन बालक वातावरण को समझने में असमर्थ होते है। उनमें अंतर्क्रिया का अभाव होता है जिस कारण उनकी वाणी का विकास सीधे प्रकार से नही हो पाता है।

11-12-21

4. Defects in perceptual ability (प्रत्यक्षीकरण संबंधी दोष)

पूर्ण रूप से दृष्टिबाधित बालकों में प्रत्यक्षीकरण दोष होता है क्योंकि उनमें दृष्टि ज्ञानेन्द्रियों का कोई योगदान नहीं होता है वे वस्तुओं को स्पर्श या सुनने का प्रयास करता है। दृष्टिबाधित के कारण प्रत्यक्षीकरण नहीं हो पाता है। इस प्रकार दृष्टिबाधित बालकों में अनेकों समस्याएँ होती है। उनमें समायोजन संबंधी समस्याएँ भी आती है। क्योंकि दूसरों की कृपा दृष्टि उन्हें सदैव ही दीनहीन (लाचार) बना देते है। इससे उन बच्चों में अलगाव की भावना आती है। बालक चिंता असुरक्षा की भावनाओं से ग्रसित होते है। सामान्यतः देखा गया है कि साथी समूह भी इसे स्वीकार नहीं करते है। दृष्टि अभाव के कारण सामाजिक अंतःक्रियाएँ भी सीमित होती है।

Educational need of visually disable child's

दृष्टिबाधित बच्चों की निम्नलिखित शैक्षिक आवश्यकताएँ है —

जहाँ तक आंशिक रूप से बाधित बच्चे है, तो उन्हें सामान्य कक्षा में कुछ तकनीकों में परिवर्तन कर एकसाथ सिखाया जाता है। लेकिन गंभीर रूप से या पूर्ण रूप से बाधित बालकों को सामान्य कक्षा में सिखाने के दौरान कई सारी समस्याएँ आती है। उन बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताएँ इस प्रकार है —

(1) कक्षा व्यवस्था :—

दृष्टिदोष वाले बालकों को सामान्य कक्षा में शिक्षण करने के लिए कक्षा व्यवस्था में परिवर्तन करना आवश्यक होगा। कक्षा में

उचित प्रकाश, वायु का प्रबंध हो तथा बैठने की व्यवस्था ठीक हो।

(ii) शैक्षिक माध्यम :-

इन बच्चों के लिए शैक्षिक माध्यम बड़े पैमाने पर है। एक औसत व सामान्य बालकों के लिए पुस्तक में 10-12 (सामान्य) Font size 18-24 (दृष्टिबाधित) Font का होना चाहिए। पुस्तक की छपाई स्पष्ट होनी चाहिए।

21-12-21

(iii) Magnifying glasses (प्रवृत शीशे) :-

इन उपकरणों की सहायता से छोटे अक्षरों को बड़े आकार में देखा जा सकता है। यदि दृष्टि-बाधित बच्चों को यह उपकरण उपलब्ध कराया जाय तो इन्हें पढ़ने में आसानी होगी।

(iv) Braille lipi (ब्रेल लिपि)

नेत्रहीन बालकों को सिखाने के लिए ब्रेल लिपि का प्रयोग किया जाता है। इस लिपि में पढ़ने लिखने के साथ-साथ गणित, संगीत, रसायन विज्ञान कम्प्यूटर आदि विषय भी सिखाये जाते हैं।

(v) Need of specialised equipments (विशिष्ट उपकरणों की आवश्यकता)

दृष्टि बाधित बच्चों की सहायता के लिए विशेष उपकरणों का होना आवश्यक होता है। इन उपकरणों में विद्युत उपकरण (electric machine) टेप-रिकार्डर प्रमुख है। भाषा, इतिहास, भूगोल, विज्ञान आदि विषयों को टेप रिकार्डर की सहायता से पढ़ा जा सकता है। क्योंकि इन बच्चों को देखने में सहायता से पढ़ाया जा सकता है। क्योंकि इन बच्चों को देखने में समस्या आती है। जबकि श्रवणेन्द्रिया ठीक होती है। वह सुनकर सीख सकते हैं।

(vi) Co-curricular activities (पाठ्य सहगामी गतिविधियाँ)

इन बालकों के शिक्षा के पाठ्यक्रम में अन्य सहगामी क्रियाओं को शामिल किया जाना चाहिए। इन क्रियाओं में संगीत, वाद-विवाद, कविता पाठ, भाषण, कला आदि रखे जाने चाहिए। इन क्रियाओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इन क्रियाओं से बच्चों में आत्मविश्वास पैदा होता है।

(vii) Vocational training (व्यवसायिक प्रशिक्षण)

इसमें दृष्टिबाधित बालकों के लिए कार्य किया जाता है। व्यवसायिक प्रशिक्षण से इन्हें निर्भर बनाया जाता है। इन बच्चों के लिए बागबानी, कुर्सी बनाना, मोमबत्ती बनाना, वर्तमान समय के अनुसार बच्चों के लिए इलेक्ट्रिकल, कम्प्यूटर, रेडियो, T.V, इत्यादि को ठीक करना व उससे संबंधित व्यवसायिक पाठ्यक्रम की ओर ले जाना आवश्यक है।

(viii) आवासीय विद्यालय :-

दृष्टिबाधित बच्चों के लिए सरकारी एवं गैर सरकारी आवासीय विद्यालय खोले जाएं जहाँ पर रहकर वो शिक्षा पा सकें।

(ix) समावेशन (Inclusion) :-

अब यह आवश्यक हो गया है कि बाधित बच्चों को पृथक न करके एक साथ सामान्य विद्यालय में शिक्षा दी जाए इन बच्चों के साथ किसी प्रकार का कोई भेदभाव न किया जाए तथा अध्यापक व विद्यालयों का उत्तरदायित्व होगा कि इन बच्चों के शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति करें। अध्यापकों का यह उत्तरदायित्व है कि वे

03/01/2022

अपनी शिक्षण तकनीकियों में परिवर्तन कर सभी बच्चों को समान रूप से पढ़ाये ताकि ये बच्चे भी शिक्षा का लाभ उठा सके।

Role of teacher for visual impaired children.

दृष्टिबाधित बालकों की शिक्षा में अध्यापक की भूमिका व उत्तरदायित्व अधिक हो जाता है। उन बच्चों की समस्याओं से अध्यापक को परिचित होना आवश्यक है। अध्यापक को बालक की वास्तविक समस्या का ज्ञान होना आवश्यक है। जिससे कि वह उसकी सुविधानुसार शिक्षण एवं नीतियाँ तैयार कर सके। एक अध्यापक बालकों में ऐसे गुणों का विकास कर सकता है, जिससे वह अच्छा बौद्धिक, सामाजिक व व्यवसायिक समायोजन कर सके। उसे बालक में ऐसी क्षमता विकसित करने का प्रयास करना चाहिए कि वह अपनी शारीरिक कमजोरी को कमजोरी के कारण खुद को हीन न समझें।

शिक्षा में अध्यापक की भूमिका (Role of teacher)

(i) दृष्टिबाधित बालकों को सामान्य बालकों की भाँति अधिगम अनुभव प्रदान किये जाने चाहिए।
(ii) उन बच्चों की समस्याओं के समाधान के लिए अतिरिक्त समय दिया जाना चाहिए।
(iii) इन बालकों के किये कार्यों की जाँच एवं निरीक्षण समय-समय पर की जानी चाहिए।
(iv) श्यामपट्ट पर लिखते समय बड़े शब्द लिखे जाये या चित्र बनाया जाये।
(v) शिक्षण सहायक सामग्री (Teaching learning Material) TLM – चार्ट, model इत्यादि का प्रयोग किया जा सकता है। आंशिक बाधित बालकों के लिए दृश्य, श्रव्य सामग्री की व्यवस्था हो। व

उनका उचित प्रयोग किया जाय।

(vi) गंभीर दृष्टिबाधित बच्चों के लिए श्रव्य सामग्री टेप रिकॉर्डर का प्रयोग किया जाना चाहिए।

(vii) कक्षा का वातावरण अच्छा हो, प्रकाश का उचित व्यवस्था हो तथा उनके बैठने के लिए उचित व्यवस्था की जानी जरुरी है।

(viii) इन बच्चों की उनकी क्षमता अनुसार व्यवसायिक प्रशिक्षण व उचित निर्देशन दिया जाना चाहिए। यह कार्य अध्यापक कर सकते हैं।

उस प्रकार अध्यापक बच्चों के लिए उचित मार्गदर्शक का कार्य करता है। उन बच्चों की शिक्षा में अध्यापक का उत्तरदायित्व और अधिक बढ़ जाता है।